Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

मालव कैशिक (मालकौंस) की रागिनियों की अवधारणा: ध्यान के संदर्भ में

DR. GIAN CHAND

Associate Professor (Music), Govt. College, Dhami, Shimla, Himachal Pradesh

सार

दैविक गुण और विशुद्धता का प्रतिपादन भारतीय शास्त्रीय संगीत की विशेषता रही है। इसी के फलस्वरूप मध्यकाल में राग-ध्यान परम्परा विकसित हुई। वास्तव में राग-ध्यान राग निर्माण की अवधारणा है। संगीतज्ञ अपनी कल्पना शक्ति से राग को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है और उसी छवि को केन्द्र में रखकर रागाभ्यास करता है। मध्यकाल में रागों को चित्र के रूप में भी प्रदर्शित किया गया। ये चित्र संगीतज्ञ और चित्रकार दोनों ही की कल्पना शक्ति का प्रतिफल होते हैं। राग की भावना और चरित्र के अनुरूप उसकी प्रतिष्ठा की जाती है। राग-संगीत का यही मूर्त और अमूर्त रूप, भारतीय संगीत की विशेषता है जो दुनियां के किसी भी संगीत में नहीं दिखती। यहां तक माना जाता है कि जो संगीतज्ञ 'राग' का ध्यान किए बिना उसका गायन करता है उसे अभीष्ट फल की प्राप्ति नहीं होती। राग की भावमयता को ध्यान में रखकर ही रागों के रूपों या ध्यानों की कल्पना की गई। नाद को उपासना का साधन माना गया है। उपासना में तन्मयता लाने के लिये उपास्य देवता को हमेशा साकार एवं सगुण रूप दिया जाता रहा है। रागों के सम्बन्ध में यही प्रक्रिया लाई गई है। अभिनय को छोड़कर स्वर ही एक ऐसा उपकरण है जो भाषा न जानने वालों के बीच एकता, समन्वय सामंजस्य स्थापित करने का कारण स्वरूप हो सकता है। स्वरों से निर्मित राग-रागिणियों की भावमूर्ति को कुशल, सिद्ध, भावुक कलाकार गा बजाकर हमारे श्रवण चक्शु समक्ष प्रत्यक्ष करते है।

कुंजी शब्द: मालव कैशिक, ,रागिनियां, ध्यान।

भूमिका

''राग के भावाधारित अर्मूत व्यक्तित्व को मूर्त करने के लिए संगीत के कुछ संप्रदायों में रागों के ध्यान की रचना हुई और यह स्पष्ट घोषित किया गया कि जो गायक 'राग' का ध्यान किए बिना उसका गायन करता है उसे अभीष्ट फल की प्राप्ति नहीं होती। स्पष्ट है कि जो गायक राग के भाव संबन्धी विशिष्ट व्यक्तित्व से परिचित नही होगा, यथा एवं रूप में भला उसकी अवतारणा कैसे करेगा और ऐसी स्थिति में श्रोताओं को रसास्वादन कैसे होगा। तेरहवीं शताब्दी तक ऐसे गायक विद्यमान थे जिन्होंने अलाउद्दीनखिलजी जैसे पाषाण को पिघला दिया था, उस समय के संगीत का आधार सुप्रसिद्ध मूर्छना-पद्धति थी, जिसका सम्बन्ध 'राग' के शरीर को जन्म देने के साथ ही साथ उसकी 'आत्मा' से है।[1]

'ई0 14 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' नामक ग्रन्थ में 7 स्वर 6 राग और उनकी 36 भाषाओं का ध्यान प्रथम बार अंकित हुआ है। राग ध्यान की यही परम्परा आगामी शताब्दी तक चलती रही। पं0 सोमनाथ तथा पं0 अहोबल ने उतर की परम्परा के अनुसार तत्कालीन रागों के सुन्दर ध्यान रचे है। ''राग ध्यान परम्परा का उद्भव और विकास राग-रागिणी वर्गीकरण के साथ-साथ ही हुआ है। इसमें एक धारा तो तंत्रसे प्रभावित है और उसमें तांत्रिक पद्धति के अनुरूप देवी-देवताओं के रूप में राग रागिनियों के ध्यान मिलते है।''[2]

''कुछ विद्वान राग ध्यान परम्परा का उद्गम् मंगत के समय से मानते है। राग ध्यान परम्परा सबसे पहले बृहदेशी में दिखाई देती है। मतंग तंत्रदर्शन से बहुत प्रभावित थे, जो बृहदेशी में जगह-2 दिखाई देता है। तंत्र में देवी-देवताओं का वर्णन विशिष्ट वाहन आयुधादि से युक्त विशिष्ट शक्तियों से सम्पन्न रूप में किया गया है।''[3]

''मध्ययुगीन रीति - परम्परा का प्रभाव संगीत संसार पर पड़े बिना न रहा रीति काव्यों में जो नायक-नायिका भेद का वर्णन हुआ, उन्ही का रूपांकन राग-रागिनियों के चित्रों में होने लगा तथा रागिनियां विरह-पीड़ित नायिकाओं की भांति चित्रित होने लगी। पं0

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सोमनाथ ने राग तोड़ी को प्रिय मिलन के लिए उत्सुक नायिका के रूप में अंकित किया है। वह श्वेत वस्त्र पहने और हाथ में वीणा लिये वन में घूम रही है और वीणा वादन से हरिणों को आकृष्ट कर रही है-

कलितविपंची विपिन लालितहरिणरूणाम्बरा हरिणी।

ध्वलांगरागरचना मृदुवचना भूषिता तोड़ी।।

इन्हीं राग-ध्यानों के आधार पर हिन्दी में भी राग ध्यानों की रचना की गई है। लक्ष्मण कवि, हरिवल्लभ तथा महाकवि देव द्वारा रचित ध्यान इसी परम्परा को आगे बढ़ाते है। ये तत्कालीन राग रूपों को ध्यान में रखकर रचे गए है, यह बात ध्यान देने योग्य है कि वर्तमान राग रूपों से उनका सामंजस्य नहीं बैठता है।[4]

''15वीं-16वीं श0 से राग ध्यान पर नायक-नायिका भेद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देने लगता है। तब फिर राग और रागिणी देव-देवी नहीं रह जाते, श्रृंगार के प्रसंग में पुरूष और स्त्री बन जाते है।''[5]

''संगीतोपनिषत्सारोद्वार के बाद शुंभकर का संगीत दामोदर (15वीं श0) पुण्डरीक विट्ठल की राग माला (16वी श0) और दामोदर पं0 का संगीत दपर्ण (17वीं श0) राग-रागिनी वर्गीकरण के प्रतिपादक प्रमुख ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त नारद का 'संगीत मकरदं' भी इस वर्गीकरण का प्रतिपादक रहा है किन्तु उसका काल अभी तक निश्चित नहीं हो सका है।[6]

इन्हीं राग ध्यानों के आधार पर राग चित्र बनाए गए है। राग-रागिनियों की परम्परा यहीं से (15वी-16वी शताब्दी) आरम्भ हुई है। इसका विशेष विस्तार राज्यस्थानी और मालवा की चित्र शैलियों में मिलता है। कुछ चित्र दक्खनी तथा कांगड़ा शैली में उपलब्ध है।

''19वीं ई0 तक यह चित्राण परम्परा बराबर बनी रही। राग ध्यानों के आधार पर राग-रागिनियों के चित्रअनेक कलाकारों द्वारा बनाए गए है। इस चित्रावली को राग माला कहते है। इसमें सामान्यतः छः राग और 36 रागिनियों का वर्णन तथा चित्रपाये जाते है। ये चित्रकुछ अंश में परम्परागत राग ध्यानों पर आधारित है।

''राग ध्यानों पर आधारित रागिनियों के चित्रों की संख्या 36,42,49,52,87 तक भी देखी जाती है - जोधपुर, जयपुर और उदयपुर ऐसी राग मालाओं के केन्द्र है। आज भी कुछ निजी संग्राहलयों के अलावा भारत कला भवन, काशी तथा बोस्टन एवं ब्रिटेन के संग्रहालयों में राग माला चित्र सुरक्षित है।''[7]

राग-रागिनी के चित्ररूप और तत्संबन्धी वर्णन कवि-कल्पना लगती है फिर भी इस आधार पर गवेषणा की गुंजाइश है। संगीत दपर्ण ऐसा ग्रन्थ है जिसमें मालवकैशिक राग तथा उसकी रागियों का वर्णन उनके ध्यानों सहित दिया गया है।

मालकौंस की रागिनियां एवं उनके ध्यान

राग रागिणी वर्गीकरण के अन्तर्गत विभिन्न मत स्वीकार्य रहें। जिन में से एक हनुमन्नमत है। हनुमतन्मत में छः पुरूष रागों में राग 'मालव कौशिक' भी है। इस मत के अनुसार 'मालव कौशिक' की निम्नलिखित रागिनियां है:-

1. तोड़ी 2. खम्बावती 3. गौरी 4. गुणकिरी 5. कुकुभा

इन मालवकैशिक रागिनियों का संगीत दपर्णानुसार, विवरण इस प्रकार है:-

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

मालवकौशिक की रागिनी तोड़ी

''मध्यमांशग्रहन्यासा सौवीरी मूर्च्छना मता।
संपूर्णा कथिता तज्ज्ञैस्तोड़ी श्री कौशिक मता।
ग्रहाशन्यासषड्जांश केचिदेनां प्रचक्षेते।।''[8]

भावार्थः-तोड़ी में मध्यम स्वर ग्रह, अंश, न्यास है तथा 'सौवीरी' (मध्यम ग्राम की) मूर्च्छना है। तोड़ी कौशिक की भार्या है और वह संपूर्ण है- संगीतज्ञ लोग ऐसा मानते है। कुछ लोग के मतानुसार षड़ज स्वर ग्रह, अंश, न्यास है।

''यह सम्पूर्ण जाति की रागिनी है। इस रागिनी में तीव्र म तथा रे ध ग कोमल है। इसके गायन का समय प्रातः कालीन बेला है। इसके स्वर इस प्रकार है-

सा रे ग तीव्र म प ध नि सा''[9]

तोड़ी रागिनी का ध्यान

''तुषारकुन्दोज्जवलदेहयष्टिः। काश्मीर कर्पूरविलिप्त देहा।
विनोदयंती हरणिं वनातें वीणा धरा राजति तोडिकेयम्।।''[10]

भावार्थः- जिसकी देह का वर्ण कुन्द अथवा बर्फ के समान निर्मल स्वच्छ और श्वेत है, जिसने केशर तथा कपूर की सुगन्धि से शरीर का मर्दन किया है, जो वन में मृगों से विनोद करती है। जिसने अपने हाथ में वीणा ले रखी है, ऐसी शोभामय कौशिक की भार्या तोड़ी है।

तोड़ी रागिनी का भाव चित्रण इस प्रकार किया हैः- ''यह एक रागिनी परमसुन्दरी अविवाहित कुंवारी युवती है। युवती 18 वर्ष से कम की अवस्था की है। उसने छींटदार कपड़े की अंगिया और लाल रंग की साड़ी पहनी है। वह पहाड़ी पर एक वृक्ष के नीचे बैठी है उसे चारों ओर हिरणों ने घेर रखा है। वह वीणा से मधुर स्वर निकाल रही है तथा वीणा की मधुर तान पर मंत्रामुग्ध होकर हिरणियां उसको चारों ओर से घेरे हुए है।'[11]

मालव कैशिक की रागिनी खम्बावती

''धवतांशग्रहन्यासा षाड़वा त्यक्तपंचमा।
खम्वावती च विज्ञेया मूर्च्छना पौरवीमता।।''[12]

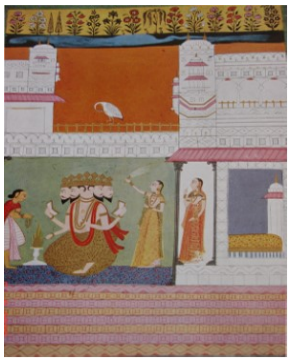

भावार्थः- खम्बावती का धैवत स्वर ग्रह, अंश, न्यास है। यह षाडव होकर पंचम स्वर से रहित है, और मूर्च्छना पौरवी (मध्यम ग्राम की) है।

ध्यान

''खम्बावती स्यात्सुखदा रसज्ञा। सौंदर्य लावण्य विभूषितांगी।
गान प्रिया कोकिला नाद तुल्या। प्रियवंदा कौशिक रागिणीयम।।''[13]

भावार्थः- खम्बावती रसज्ञा होने के कारण सुख देने वाली है। सौन्दर्य तथा लावण्य से जिसका शरीर अतिशय शोभायमान है। जिसे संगीत अतीत प्रिय है। जिसका नाद कोकिल के समान है। जो मधुर भाषिणी है ऐसी यह कौशिक रागिनी जाननी चाहिए।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

'भारतीय संगीत का इतिहास' के अनुसार खम्बावती का भाव चित्रण

''यह रागिणी एक परमसुन्दरी चन्द्रमुखी महिला, जिसके केश काले तथा चमकदार है, के रूप लावण्य का वर्णन करती है यह हरे रंग का अंगिया और लाल रंग की साड़ी पहनें है। यह कोमल तथा सुसज्जित बिस्तर पर बैठी हुई अपने प्रेमी के आगमन की प्रतीक्षा कर रही है। उसके बाँई ओर बुलबुल बैठी है। यह बुल-बुल उसके गीतों को मधुर तान की सूचना दे रही है।'[14]

मालवकौशिक की रागिनी गौरी

''ग्रहांशन्यासषड्जा स्याद्रिपवज्र्या सुखप्रदा

मूर्च्छना प्रथमा ज्ञेया गौरी सर्वागंसुन्दरी।।''[15]

भावार्थः- गौरी में षडज स्वर ग्रह, अंश, न्यास है। ''रि प'' वर्जित औड़व होकर सुखपद्र है। मूर्च्छना प्रथम है तथा सर्वागं सुन्दर है।

ध्यानः

''निवेशयंती श्रवणोऽवतंसम्। आम्रांकुरं कोकिलनादरम्यम्।
श्यामा मधुस्यंदिसुसूक्ष्मनादा। गौरीयमुक्ता किल कोहलेन।।''[16]

भावार्थः- जिसका श्याम वर्ण है। जिसके कानों में आम्र मंजरी (आम के बौर) के आभूषण है। कोकिल के नाद के समान (जिसका कंठ स्वर) रम्य होकर जिसमें से मधु टपकता है। जिसका नाद सूक्ष्म है। ऐसी कोंहिल पंडित के द्वारा वर्णित 'गौरी' रागिनी है।

गौरी का एक अन्य ध्यानः- ''यह एक अत्यंत सुन्दर प्यारी विनोद पूर्ण तथा मधुर संगीतकार युवती है। उसका कंठ सुरीला है। वह कोमलांगनी वासनामय युवती है। वह सफेद पोशाक पहने हुए है। उसके एक हाथ में फूलों का गुच्छा है। वह मादक द्रव्य के नशे में है। यह रागनी औड़व जाति की है। इसमें रे और प वर्जित है।

मालवकौशिक की रागिनी गुणकिरी

'रिधहीना गुणकिरी औउवा परिकीर्तिता।
निग्रहांशा तु नित्या सा कैश्चित् षड़जाश्रया मता।
रजनी मूर्च्छना चाऽत्र मालवाश्रयिणी तु सा।।''[17]

भावार्थः-गुणकिरी में ''रि ध'' वर्जित होने से यह औडव रागिनी है। ''नि'' स्वर ग्रह,अंश है। कुछ लोग षडज को ग्रह मानते है। रजनी मूर्च्छना है, तथा मालवआश्रयिणी है। (परन्तु टीका में ''भैरवश्रयिणी'' ऐसा मत है)।

ध्यान

'शौकाभिभूतनश्यनारूणदीनदृष्टिः
नम्रानना धरणिधूसरगात्रयष्टिः।
आमुक्तचारूकवरी प्रियदूरवृता
संकीर्तिता गुणकिरी करूणोत्कृशांगी।।'[18]

भावार्थः- शोक से त्रासित होने से जिसके नेत्रलाल होकर जिसकी दृष्टि दीन हो गई है। जिसने अपना मुख नीचा कर रखा है। जिसके शरीर का रंग पृथ्वी के समान चितकबरा है। जिसकी वेणी खुल गई। जो अपने प्रियतम से बिछुड़ गई हे। जो दयनीय तथा दुर्बल हो गई है ऐसी गुणकिरी रागिनी कही गई है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

''यह एक सुन्दर महिला जो उसके प्रेमी ने त्याग दी है, की दशा का वर्णन करती है। वह आम के वृक्ष के नीचे बैठी है। वह अपने प्रेमी से मिलने की इच्छा से फूट-फूट कर रो रही है। वह अपने मन के राजा से मिलने की इच्छा से पूर्ण खोई है।''[19]

मालवकौशक की रागिनी कुकुभा

''धैवतांशग्रहन्यासां संपूर्णा कुकुभा मता।
तथिमूर्च्छनोत्पन्ना श्रृंङ्गारसमंडिता''।।[20]

भावार्थः- कुकुभ रागिनी संपूर्ण है। धैवत स्वर ग्रह, अंश और न्यास है। तीसरी मूर्च्छना है तथा श्रृंगार रस से शोभित होती है।

ध्यान

सुपोषितांगी रतिमंडितांगी चन्द्रनना चंपकदामयुक्ता।
कटाक्षिणी स्यात्परमा विचत्रा दानैन युक्ता कुकुभा मनोज्ञा।।

भावार्थः- रति चिन्हों से जो सुशोभित है। चन्द्रमा के समान जिसका मुख है। जिसने पुष्पों की माला पहन रखी है। जो कटाक्ष करके देखने वाली है तथा अतिशय विचित्र है। ऐसी दानशीला, मनोरमा कुकुभ है।

राम अवतार सिंह कृत ''भारतीय संगीत का इतिहास' के अनुसार रागिनी ककुभ का भाव चित्र इस प्रकार है-

''यह रागिनी एक परम सुन्दरी, गुलाबी मुखमुद्रा और आकर्षक शारीरिक गठन वाली महिला का प्रतीक है। उसकी आंखे मदभरी है उसके गले में पुष्पहार शोभायमान है। उसका प्रेमी उसी सुकोमिल और सुसज्जित बिस्तर पर उसके समीप बैठा है। दोनो प्रसन्न मुद्रा में है।''[21]

संगीतज्ञ उपरोक्त रागनियों को इन्हीं प्रचलित ध्यान चित्रों के माध्यम से अवतरित करने का प्रयास करता है। कुछ संप्रदायों में आज भी राग अवतारणा की यह एक अहम कड़ी है जिसका निर्वाह बड़ी शिद्दत से किया जाता है।

उपसंहार

वास्तव में राग-ध्यान राग निर्माण की अवधारणा है। संगीतज्ञ अपनी कल्पना शक्ति से राग को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है और उसी छवि को केन्द्र में रखकर रागाभ्यास करता है। मध्यकाल में रागों को चित्र के रूप में भी प्रदर्शित किया गया। ये चित्र संगीतज्ञ और चित्रकार दोनों ही की कल्पना शक्ति का प्रतिफल होते हैं। राग की भावना और चरित्र के अनुरूप उसकी प्रतिष्ठा की जाती है। राग-संगीत का यही मूर्त और अमूर्त रूप, भारतीय संगीत की विशेषता है जो दुनियां के किसी भी संगीत में नहीं दिखती। यहां तक माना जाता है कि जो संगीतज्ञ 'राग' का ध्यान किए बिना उसका गायन करता है उसे अभीष्ट फल की प्राप्ति नहीं होती। राग की भावमयता को ध्यान में रखकर ही रागों के रूपों या ध्यानों की कल्पना की गई। नाद को उपासना का साधन माना गया है। उपासना में तन्मयता लाने के लिये उपास्य देवता को हमेशा साकार एवं सगुण रूप दिया जाता रहा है। रागों के सम्बन्ध में यही प्रक्रिया लाई गई है। अभिनय को छोड़कर स्वर ही एक ऐसा उपकरण है जो भाषा न जानने वालों के बीच एकता, समन्वय सामंजस्य स्थापित करने का कारण स्वरूप हो सकता है। स्वरों से निर्मित राग-रागिणियों की भावमूर्ति को कुशल, सिद्ध, भावुक कलाकार गा बजाकर हमारे श्रवण चक्शु समक्ष प्रत्यक्ष करते है।

संदर्भ सूची

1. संगीत चिन्तामणि, आ0के0सी0डी0 बृहस्पति-पृ0 400
2. सहस रस, डा0 प्रेमलता शर्मा-पृ0 118

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

3. नायक नायिका भेद और राग वर्गीकरण डा0 प्रदीप कुमार दिक्षित-पृ0 95
4. संगीत बोध, शरचन्द्र श्रीधर परांजपे-पृ 70
5. सहस रस् डा0 प्रेम लता शर्मा-पृ0 118
6. सहस रस, डा0 प्रेम लता शर्मा-पृ0 117
7. संगीत बोध, शरचन्द्र श्रीधर परांजये-पृ0 70
8. संगीत दपर्ण दामोदर (पं विशवंभर नाथ भट्ट)-पृ0 89
9. भारतीय संगीत का इतिहास (द्वितीय भाग), राम अवतार-पृ0 179
10. संगीत दपर्ण, दामोदर (विश्वंभर नाथ भट्ट)-पृ0 90
11. भारतीय संगीत का इतिहास (भाग-2) राम अवतार-पृ0 179
12. संगीतदपर्ण, दामोदर (विश्वंभर नाथ भट्ट)-प0 90
13. संगीत, दामोदर (विश्वंभर नाथ भट्ट), पृ0 91
14. भारतीय संगीत का इतिहास, रामअवतार, पृ0 197
15. संगीत दपर्ण दामोदर (विश्ंवभर नाथ भट्ट) - पृ0 91
16. संगीत दपर्ण दामोदर (विश्ंवभर नाथ भट्ट) - पृ0 91
17. संगीत दपर्ण, दामोदर (पं0 विश्वंभर नाथ भट्ट) पृ0 92
18. संगीत दपर्ण, दामोदर, (पं0 विश्वंभर नाथ भट्ट)-पृ0 92
19. भारतीय संगीत का इतिहास, राम अवतार सिंह, पृ0 180
20. संगीत दपर्ण, दामोदर (पं0 विश्वभंर नाथ भट्ट) वृ0 93
21. भारतीय संगीत का इतिहास, राम अवतार सिंह, (द्वितीय भाग), पृ0 180